

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण सुद्ध-१५, मंगलवार, ता. २६-८-१९८०
वचनामृत-३२१, ३२३, ३२६. प्रवचन नं. १९

वचनामृत-३२१. मुद्देकी बात यहां तो, भाई! बहिन अंदरमें अनुभवमेंसे असंभ्य अरब वर्षोंका तो जतिस्मरण (ज्ञान) है. वह कौन है, साधारण प्राणी पहचान सके ऐसा नहीं है. मुट्टे जैसा लगे. असंभ्य अरबों वर्षोंका जतिस्मरण. नौ भव. अनुभूति, सम्यग्दर्शन और आनंदका स्वाद (आया है), उसमेंसे यह वाणी निकली है. कोई बार बोले होंगे, उसमेंसे विभा है. इसमें अतिशयोक्तिसे कुछ नहीं कहा है, हां! आहाहा..!

बहिनकी वाणीमें यह आया, 'पर्याय पर दृष्टि रचनेसे चैतन्य प्रगट नहीं होता.' आहाहा..! परपदार्थ पर दृष्टि रचनेसे, त्रिलोकनाथ तीर्थकरदेव पर दृष्टि रचनेसे समकित तो नहीं होता. उनकी वाणी पर लक्ष्य रचनेसे भी समकित नहीं होता. आहाहा..! उनकी वाणी निमित्त और अपनेमें ज्ञान होनेकी लायकातसे ज्ञान हुआ हो, उससे भी समकित नहीं होता. आहाहा..! गजब बात, प्रभु! अंतरकी द्रव्यकी दृष्टि जो पर्याय, उस पर्याय पर दृष्टि रचनेसे चैतन्य प्रगट नहीं होता. निर्मल पर्याय प्रगट होती हो, उस पर भी दृष्टि रचनेसे नहीं होता. आहाहा..! नियमसारमें प०वीं गाथामें तो यहां तक कहा, प्रभु! तेरी पर्यायको भी हम तो परद्रव्य कहते हैं. आहाहा..! प०वीं गाथा. जगत प्राणी कुछ भी मानो या कुछ भी स्वच्छंद करो, परंतु अंतर भगवान द्रव्य, गुण और पर्याय ये तीन पर, पर्याय पर्याय दृष्टि देनेसे भी सम्यग्दर्शन नहीं होता. आहाहा..!

'द्रव्यदृष्टि करनेसे ही चैतन्य प्रगट होता है.' चैतन्य भगवान पूर्णानंदका नाथ, उस पर दृष्टि करनेसे सम्यग्दर्शन होता है. जिसमें अनंत-अनंत विभूति भरी है. जिसमें अनंत-अनंत समृद्धिकी संपदा पडी है. ऐसा भगवान आत्मा, 'द्रव्यदृष्टि करनेसे ही चैतन्य प्रगट होता है.' आहाहा..! भाषा संक्षेपमें है, लेकिन.. आहा..! इसमें मान-अपमानका कुछ नहीं है. हम ऐसा कहे और आप ऐसा कहते हो. बापू! प्रभु! ऐसा कुछ नहीं है. मार्ग तो यह है. हम व्यवहारसे कहते हैं, पर्यायसे कहते हो, आप हमें ना कहकर जूठा धर्राते हो. बापू! प्रभु! आपको जूठा नहीं धर्राते. प्रभु! मार्ग तो यह है. भगवंत! माइ करना, तुजे दूसरी तरहसे दुःख

लगे तो. आह्लाहा..! दूसरा क्या करें?

पञ्चनंदि आचार्य महाराज भी ऐसा बोले,.. आह्लाहा..! उसमें उतना विषा है, ब्रह्मचर्यका रक्षां अध्याय विषा. विषनेके बाद कहते हैं, हे युवानों! शरीरसे ब्रह्मचर्य पालना वह ब्रह्मचर्य नहीं है. कायासे विषय न लेना वह कोई ब्रह्मचर्य नहीं है. आह्लाहा..! मनसे विकल्प उठता है कि मैं ब्रह्मचर्या पावुं. वह भी कोई ब्रह्मचर्य नहीं है. आह्लाहा..! आचार्य महाराज पञ्चनंदि प्रभु ऐसा कहते हैं,.. आह्लाहा..! प्रभु! द्रव्यदृष्टि... तेरी दृष्टि शास्त्रमें जाये तो भी व्यभिचारी है, प्रभु! आह्लाहा..! गजब बात! लोगोंको कठिन लगे.

उच्छेनवाले आये थे. ओक बार कहा था. उच्छेनवाले सेठ नहीं थे? पंडित. सत्येन्द्र, उच्छेनका पंडित है न? आये थे. उसे कहा था, बापू! यह है, भाई! वीतरागके शास्त्र पर दृष्टि करनेसे, प्रभु! मुनि पंच महाप्रतधारी अकावतारी, केवलज्ञानके केशायत ऐसा इरमाते हैं, पर उपर राग करनेसे तो राग ही होता है. परके आश्रयसे धर्म बिलकुल होता नहीं. आह्लाहा..! यह बात, प्रभु! क्या करें? यह वीतराग सर्वज्ञदेवकी बात, भाव, द्विगंभरमें रह गया है. बाकी कोई संप्रदायमें यह बात है नहीं. स्थानकवासी और श्वेतांबर जैन नहीं है. वे जैन नहीं है. मोक्षमार्ग प्रकाशकमें टोडरमल स्पष्ट विषते हैं, स्थानकवासी और श्वेतांबर अन्य मति हैं, जैन नहीं है. अर..र..र..! क्योंकि उसमें यह वाणी सुनने मिलती नहीं. उसमें हे ही नहीं. आह्लाहा..!

यहां कहते हैं कि, 'द्रव्यदृष्टि करनेसे ही चैतन्य प्रगट होता है. द्रव्यमें अनंत सामर्थ्य भरा है,...' ओहो..! प्रभु! द्रव्यमें तो अनंत सामर्थ्य है. केवलज्ञानी परमात्माने तो प्रत्यक्ष देखा है. सम्यग्दर्शनमें भी वह अयित्य यमत्कार अंदरमें होता है. वेदन थोडा, वेदन थोडा है, लेकिन अंतरकी अनंत यमत्कृति सम्यग्दर्शनमें भी चैतन्यका यमत्कार भासमें आता है. आह्लाहा..! ऐसी बात है, पाटनीशु! अरे..! प्रभु! कितनोंको दुःख लगे कि लमको.. बापू! तेरे आत्माको शांति मिले. भगवान होओ, यहां तो सब प्रभु बन जाओ. मार्ग दूसरा है. आह्लाहा..! बाकी तो सब भगवान हो जाओ. परंतु इस रास्ते भगवान होंगे, दूसरे रास्तेसे नहीं होंगे. आह्लाहा..!

यहां कहते हैं कि 'द्रव्यमें अनंत सामर्थ्य भरा है,...' द्रव्य यानी भगवान आत्मा. त्रिकावी सनातन सत्य, त्रिकावी अनादिअनंत सत् ऐसा प्रभु, उसमें तो अनंत सामर्थ्य भरा है. आह्लाहा..! 'उस द्रव्य पर दृष्टि लगाओ.' बहुत संक्षेपमें कहा बहिनने. द्रव्य पर दृष्टि लाग दो. बाकी सब बातें हैं, कुछ भी हो. आह्लाहा..! १३वीं गाथामें तो यहां तक कहा कि नय, निक्षेप, प्रमाणासे आत्माका विचार करना.

परंतु वह भी अभूतार्थ है. आलाहा..! १३वीं गाथामें कहा है. समयसार. समयसार 'ग्रंथाधिराज तारामां भावो ब्रह्मांडना भया.' 'ग्रंथाधिराज तारामां भावो ब्रह्मांडना भया'. अक-अक पदमें, अक-अक गाथामें. यहां तो बहिन स्वयं अनुभवसे कहते हैं. आलाहा..! 'द्रव्य पर दृष्टि लगाओ.'

'निगोदसे लेकर सिद्ध तककी कोई भी पर्याय शुद्ध दृष्टिका विषय नहीं है.' आलाहा..! सिद्ध भी सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. आलाहा..! कठिन लगे, लोगोंको अकांत लगे, क्या करें? भगवानका विरह हुआ, प्रभु यहां रह गये. सीमंधर भगवान तो महाविदेहमें रह गये. आलाहा..! उनका विरह हुआ. पीछे यह बात रह गयी. लोगोंको यह अतिशयोक्तिका अकांत है ऐसा लगता है. प्रभु! ऐसा नहीं है. प्रभु! वस्तुका स्वरूप ऐसा है. तीन लोकके नाथ सीमंधर भगवान यहां कहते हैं. प्रभु! आलाहा..! बहिनको तो ध्यानमें आंभ भूलनेके बाद कोई बार ऐसा लगता है, मैं भरतमें हूँ कि महाविदेहमें हूँ, भूल जाते हैं. कौन माने? आलाहा..! ऐसे देओ तो मुर्दे. ऐसे जडे रहे. आलाहा..! भाई! शरीरकी स्थिति कोई भी हो, मनकी स्थिति कोई भी हो. आलाहा..! वाणीकी स्थिति कोई भी हो, भगवान तो मन, वाणी, देहसे पार है अंदरमें. आलाहा..! पर्यायसे भी पार है. मन, वचन, कायासे तो पार है... आलाहा..! पर्यायसे भी पार है. कहा न?

'निगोदसे लेकर सिद्ध तककी कोई भी पर्याय शुद्ध दृष्टिका विषय नहीं है.' शुद्ध दृष्टिका सिद्ध भी विषय नहीं है. आलाहा..! 'साधकदशा भी...' मोक्षका मार्ग प्रगट हुआ, ज्ञायकभावका आनंदका अनुभव हुआ और साधकदशा प्रगट हुयी और साधकसे सिद्ध तो अवश्य होनेवाले हैं. दृष्ट उगी है तो पूर्णिमा होगी है. ऐसे अपनेमें अपना अनुभव जहां हुआ तो अल्प कालमें केवलज्ञान तो होगा ही. परंतु यहां कहते हैं कि 'साधकदशा भी शुद्ध दृष्टिके विषयभूत मूल स्वभावमें नहीं है.' आलाहा..! जिस भावसे निश्चित होता है कि मैं अल्प कालमें सिद्ध होऊंगा. वह दशा भी दृष्टिका विषय नहीं. साधकदशा मोक्षका मार्ग निश्चय, स्वद्रव्यके आश्रयसे सम्यग्दर्शन, ज्ञान हुआ, चारित्र हुआ वह भी दृष्टिका विषय नहीं. आलाहा..! प्रभु! कठिन लगे, लेकिन रास्ता तो तेरे घरमें है न, नाथ! प्रभु! तू जितना बडा है उसकी बात करते हैं. तूने चाहे जैसा माना हो, परंतु तेरी महत्ताका तो पार नहीं है. सर्वज्ञ भी..

जे स्वरूप सर्वज्ञे दीकुं ज्ञानमां,
कही शक्या नहीं ते पण श्री भगवान जे,

तेल स्वरूपने अन्य वाणी ते शुं कले?
 अनुभवगोचर मात्र रहुं ते ज्ञान ज्ञे,
 अपूर्व अवसर जेवो क्यारे आवशे?

सिद्धपद कब आयेगा? सिद्ध दशाकी जंभना. आला..! श्रीमद् राजचंद्र गृहस्थाश्रममें थे. पुत्र-पुत्री थे. लज्जारोंका, लाजोंको जेहरीका व्यापार था. परंतु अंदरमेंसे नारियेलमें जैसे गोला भिन्न रहता है, श्रीकल-गोला. सूजा गोला जैसे भिन्न रहता है, वैसे ये देहमें भिन्न रहते हैं, प्रभु! जैसा आत्मा अंदर भगवान पूर्णानंदकी संपदासे भरा पडा (है).

‘साधकदशा भी शुद्ध दृष्टिके विषयभूत मूल स्वभावमें नहीं है.’ यानी क्या कला? मूल स्वभाव जे त्रिकाव है, उसमें साधकदशा भी दृष्टिका विषय मूल स्वभावमें नहीं है. आलाला..! जैसा उपदेश. आला..! ‘साधकदशा भी शुद्ध दृष्टिके विषयभूत...’ विषयभूत क्या? ‘मूल स्वभावमें नहीं है.’ त्रिकावी स्वभावमें साधकदशा नहीं है. त्रिकावी स्वभाव, मूल स्वभाव भगवान स्वभाव, ध्रुव आनंद स्वभावमें साधकदशाका अभाव है. क्योंकि साधकदशा तो पर्याय है. आलाला..! वल साधकदशा भी ध्रुव पर उपर-उपर तिरती है. आलाला..! जिसका मूल स्वभावमें प्रवेश नहीं. जैसा मार्ग है, प्रभु! कठिन लगे या कुछ भी लगे, दूसरी बात आसान लगे और यल बात कठिन लगे, परंतु मार्ग तो प्रभु यल है. दूसरा तो कोई मार्ग है नहीं. ‘अक लोय त्रण काणमां परमार्थनो पंथ’ परमार्थका पंथ तो सिद्धदशा पाना, जिसमें सिद्धदशा भी नहीं है. आलाला..! सिद्धदशा पानेको, जिसमें सिद्धदशा भी नहीं है, जैसी द्रव्यदृष्टिसे साधकपना प्रगट होता है और उसके आश्रयसे सिद्धदशा उत्पन्न होती है. आलाला..! जैसा मार्ग है, प्रभु! याले जिस प्रकारसे बाहरसे बात करे, परंतु मार्ग तो यल है. आलाला..!

१४२-१४३ गाथामें वहां तक लिया है, प्रभु नयातिक्रान्त है. विकल्पवाली नय, हां! विकल्पवाली नयसे नयातिक्रान्त है. आला..! जे नय है, वल भी दृष्टिका विषय नहीं. आलाला..! नय तो ज्ञानका अंश है और भगवान तो अनंत संपदासे भरा पडा भगवान है. आलाला..! यल कहते हैं, ‘द्रव्यदृष्टि करनेसे ही...’ वस्तुकी दृष्टि करनेसे ही. ही. अक ही बात. कथंचित् साधक दूसरा और कथंचित् दूसरा मार्ग, जैसा कुछ नहीं. कोई कहते हैं न? कथंचित् व्यवहार मार्ग भी है. व्यवहार है सही, व्यवहार है सही, व्यवहारनय है तो विषय है सही, परंतु उससे आत्माका लाभ हो, जैसा किंचित् भी नहीं है. आलाला..! दो नयका विषय तो अनादिअनंत है.

पर्याय है न. पर्याय व्यवहारनयका विषय है. हो, परंतु उसका आश्रय करने लायक नहीं. आह्लाहा..! आश्रय करने लायक तो त्रिकावी भगवान (है).

‘शुद्ध पर्यायिकी दृष्टि करनेसे भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता.’ आह्लाहा..! क्या कला? उतर है न? ‘शुद्ध पर्यायिकी दृष्टि करनेसे भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता.’ शुद्ध पर्याय सिद्धकी है, वह प्रगट होती है, उससे आगे जा नहीं सकता. पर्यायिकीमें उससे आगे जा नहीं सकता. द्रव्य तो है वह है. द्रव्य तो अनंत-अनंत संपदासे भरपूर (है). तो भी सिद्धदशाके आगे बढ़ जाता है, ऐसा नहीं है. सिद्धदशा प्रगट लुयी सो लुयी, उससे विशेष द्रव्यमें बहुत भरा है तो सिद्धदशासे आगे कुछ विशेष आनंद आयेगा, ऐसा है नहीं. आह्लाहा..!

अरे..! कितनोंको तो ऐसा लगे, यह क्या है? बापू! प्रभुके वचन यह है. आह्लाहा..! भगवान! सीमंधर भगवान विराजते हैं. उनके यह वचन हैं. महाविदेहसे बलिन आये हैं. आह्लाहा..! वहांसे आनेके बाद छोटी उम्रसे वहांके संस्कार याद आते थे.

वहां कलते हैं, कि ‘शुद्ध पर्यायिकी दृष्टिसे भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता.’ यह क्या कलते हैं? द्रव्यमें अनंत संपदा और अनंत-अनंत शक्ति एवं सामर्थ्य है. फिर सिद्धदशाके बाद भी आगे बढ़ते जाते हैं कि नहीं? सिद्धदशा होनेके बाद भी आनंद और सुख बढ़ता है कि नहीं? नहीं. बस, पूर्ण हो गया. सिद्धदशा पूर्ण हो गयी. उससे आगे बढ़ते नहीं. द्रव्य परिपूर्ण पडा है. उस वक्त भी द्रव्य तो परिपूर्ण पडा है. फिर भी उसके बाद आगे नहीं बढ़ता. आह्लाहा..! ‘शुद्ध पर्यायिकी दृष्टिसे भी...’ आह्लाहा..! क्या कलते हैं? राग और पुण्य, दया, मैं जगतका कल्याण करूं, वह विकल्प तो है ही नहीं, परंतु जो सिद्धदशा प्रगट लुयी उससे भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता. पर्यायिकीमें उससे आगे नहीं बढ़ा जा सकता. पूर्णानंदका नाथ जहां पर्यायिकीमें पूर्ण रूपसे प्रगट हुआ, पर्यायिकीमें द्रव्य तो द्रव्य है. फिर सिद्धदशासे आगे बढ़ना, द्रव्यमें बहुत भरा है तो सिद्धसे भी आगे शुद्धता बढ़ती जाती है, ऐसा है नहीं. आह्लाहा..! शब्द ऐसा है न.

‘द्रव्यदृष्टिकी मात्र...’ आह्लाहा..! वस्तु त्रिकावी भगवान चारों ओरसे चिंताको छोड दे, भगवान परमात्मा पूर्ण पडा है, उस पर दृष्टि लगा दे. जहां नय, निक्षेप और प्रमाण भी, आचार्य कलशमें कलते हैं, वहां नय, निक्षेप और प्रमाण तो दिखते नहीं, आह्लाहा..! परंतु हम अनुभव करते हैं, ऐसा भी दिखता नहीं. अनुभव करते हैं. आह्लाहा..! लेकिन उस देहनेके लिये वहां रुकते नहीं. आह्लाहा..! याद कर-

करके वहां रुकना ऐसा नहीं. आलाहा..! ऐसी बात है, प्रभु! बात तो सूक्ष्म है. थोड़े शब्दमें धतना है.

‘द्रव्यदृष्टिमें मात्र शुद्ध अर्थात् द्रव्यसामान्यका ही स्वीकार होता है.’ द्रव्यदृष्टिमें.. कोई ऐसा कहे कि सिद्धपदकी निर्मल पर्यायसे भी बढ जायेगा, ऐसा है नहीं. ‘द्रव्यदृष्टिमें मात्र शुद्ध अर्थात् द्रव्यसामान्यका ही स्वीकार होता है.’ द्रव्यदृष्टिसे मात्र. पर्याय भी नहीं. आश्रय लेनेवाली तो पर्याय है. उसकी दृष्टि है वल तो पर्याय है. परंतु वल पर्याय, ‘द्रव्यदृष्टिमें मात्र शुद्ध अर्थात् द्रव्यसामान्य..’ जो त्रिकाल भगवान, विशेष भी नहीं. विशेष तो निर्णय करता है. विशेष तो अनुभव करता है. विशेष बिना तो सामान्य होता नहीं. आलाहा..! सामान्य और विशेष, दो तो उसका त्रिकाल स्वभाव है. सामान्य विशेष बिना होता नहीं, विशेष सामान्य बिना होता नहीं. दोनों चीज वस्तुकी चीज है. भगवानने बनायी है धसलिये कला है, ऐसा है नहीं. ऐसी वस्तु अनादृसे अकारणरूप थी. छल ढालमें आता है, वल चौदल ब्रह्मांड अकारणरूप है, किसीने बनाया नहीं. जैसे ही सत् अनादृसे (है). आलाहा..!

उसमें ‘द्रव्यसामान्यका ही स्वीकार होता है.’ सब छोडकर आलाहा..! अक द्रव्यसामान्यका स्वीकार है. पर्यायका भी स्वीकार नहीं. वल तो ठीक कला, लेकिन आत्मामें धतनी संपदा है, अनंत-अनंत सिद्धपर्यायसे भी कोई विशेष पर्याय होगी कि नहीं? प्रभु! अस! सिद्धपर्याय किर बढे, वल तीन कालमें बढती नहीं. देओ! वल बलिनके वयन! सिद्धदृशाके बाद भवे पूर्णानंदका नाथ अनंत आनंद और अनंत शांति पडी है, परंतु सद्धदृशाके बाद शुद्धि बढे ऐसा है नहीं. पूर्ण शुद्धि हो गयी. आलाहा..! ३२१ लुआ न? बादमें कौन-सा है? ३२३. विभ विया है?

जिसने शांतिका स्वाद यभ लिया हो उसे राग नहीं पुसाता. वह परिणतिमें विभावसे दूर भागता है. जैसे अक ओर बईका ढेर हो और दूसरी ओर अग्नि हो तो उन दोनोके बीच जडा हुआ मनुष्य अग्निसे दूर भागता हुआ बईकी ओर ढलता है, उसी प्रकार जिसने थोडा भी सुभका स्वाद यभा है, जिसे थोडी भी शांतिका वेदन वर्त रहा है ऐसा ज्ञानी जो व दलसे अर्थात् रागसे दूर भागता है अवं शीतलताकी ओर ढलता है.

३२३.

३२३. ‘जिसने शांतिका स्वाद यभ लिया हो..’ आलाहा..! जिसने सम्यदृशनमें शरुआतके सम्यज्ज्ञानमें आत्माका स्वाद यभ लिया.. आलाहा..! भगवान त्रिलोकनाथका..

ध्रुवका स्वाद नहीं, हां! स्वाद तो पर्यायमें आता है. ध्रुव पर दृष्टि पड़ती है तो दृष्टिमें स्वाद आता है, ध्रुवमें नहीं. प्रवचनसार, १७२ गाथामें तो वहां तक कहा, कि वेदन आया वही मैं तो आत्मा हूं. ध्रुव-ध्रुवका हमें क्या काम? १७२ गाथा. २०वां बोल है. प्रवचनसार. मुझे तो प्रत्यभिज्ञान (अर्थात्) जो (कल) था वही आज है, जैसे द्रव्यके आविगन बिना, द्रव्यके आविगन बिना, द्रव्यके स्पर्श बिना.. आलाहा..! २०वां बोल है. मुझे तो वेदन होता है वही मैं आत्मा हूं. कहे, अक ओर द्रव्यका मालात्म्य, अक ओर कहे कि वेदन है वही मैं आत्मा हूं. मुझे तो वेदनमें आया वह आत्मा हूं. भले आया ध्रुवमेंसे. परंतु आया वेदन. आलाहा..! १७२में है. प्रवचनसार.

मुमुक्षु :- पर्यायको आत्मा कहा?

उत्तर :- पर्यायको ही आत्मा कहा. सखी बात. वही मैं हूं. यहां है प्रवचनसार? प्रवचनसार नहीं होगा. है? यह है? हां, प्रवचनसार (है). क्या कहते हैं? देओ!

‘विंग अर्थात्...’ विंग अर्थात् यहां गुजराती है. ‘प्रत्यभिज्ञानका कारण...’ प्रत्यभिज्ञानका कारण अर्थात् कल था वह यह है, यह है, यह है. यह.. यह.. यह.. त्रिकाव ध्रुव रहेगा. ‘प्रत्यभिज्ञानका कारण ऐसा जो ग्रहण अर्थात् अर्थावबोध सामान्य...’ अर्थात् पदार्थके ज्ञानका सामान्यपना जो त्रिकावी. वह ‘जिसके नहीं है...’ आलाहा..! धतना दृष्टिका जोर द्रव्यमें और यहां कहे कि द्रव्य नहीं है. मैं द्रव्यको छूता नहीं. मुझे तो आनंदका वेदन आता है, वह मैं हूं. देओ! ‘वह अविंगग्रहण है; धसप्रकार ‘आत्मा द्रव्यसे नहीं आविगित..’ आलाहा..! प्रभु! उसकी वेदनकी जो पर्याय है, वह पर्याय द्रव्यको आविगन करती नहीं. आलाहा..! गजब बात है, भाई! पाठ है न? देओ! २०वां बोल.

‘विंग अर्थात् प्रत्यभिज्ञानका कारण ऐसा जो ग्रहण अर्थात् अर्थावबोध सामान्य...’ द्रव्य वह ‘जिसके नहीं है...’ द्रव्य जिसे नहीं है. आलाहा..! अक ओर द्रव्यकी बात, अक ओर कहे, द्रव्य नहीं है. अक ओर कहे, द्रव्य नहीं है. किस अपेक्षासे? ‘वह अविंगग्रहण है. धसप्रकार ‘आत्मा द्रव्यसे नहीं आविगित ऐसी शुद्ध पर्याय है’ जैसे अर्थकी प्राप्ति होती है.’ अविंगग्रहणमेंसे ऐसा अर्थ निकलता है. अविंगग्रहण. विंग नाम सामान्य द्रव्य, उसके स्पर्श बिना पर्याय जो होती है वह मैं हूं. आलाहा..! २०वां बोल है, प्रवचनसार. सबका वांचन हो गया है, व्याख्यान हो गया है. चार महिनेमें लुअे हैं. मुंबईसे छपेंगे. आलाहा..!

‘शुद्ध पर्यायकी दृष्टिसे भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता.’ वह नहीं. ३२३.

‘जिसने शांतिका स्वाद यज बिया हो उसे राग नहीं पुसाता.’ आलाहा..! जिसने अंतर भगवान शांतिका स्वाद जितना आया, द्रव्य स्वभावका पर्यायमें अनुभव आया उसको.. आलाहा..! राग नहीं सुहाता. चाहे तो तीर्थकर गोत्रका राग हो, चाहे तो भगवानकी भक्तिका राग हो, वह राग नहीं सुहाता. आलाहा..! राग सुभद्रप नहीं लगता. आलाहा..! राग आता है. जब तक वीतराग न हो तब तक साधकको राग आता है, लेकिन राग सुहाता नहीं. आलाहा..! ऐसी बात. आलाहा..!

‘वह परिणतिमें...’ उसकी परिणतिमें साधकजिवकी परिणतिमें ‘विभावसे दूर भागता है.’ आलाहा..! भगवान आत्माकी परिणति जहां लुयी, अवस्था, निर्मल आनंदकी जहां दशा लुयी, आलाहा..! वह विभावसे दूर भागता है. विभावकी ओर जाता ही नहीं. उसका ज्ञान हो जाता है. परंतु विभावकी ओर उसका उपयोग भी नहीं जाता है. आलाहा..! फिर भी विभावका ज्ञान होता है. उपयोग न लाय तो भी ज्ञानका स्वभाव उस समय अपनेको और परको जाननेका पर्यायका स्वभाव है तो स्वपरप्रकाशक ज्ञान होता है. उपयोग न रहे तो भी. अपना स्वभाव है स्वपरप्रकाशक पर्याय. आलाहा..! ‘विभावसे दूर भागता है.’

‘जैसे अक ओर बईका ढेर हो...’ अक ओर बईका ढेर (पडा हो) ‘और दूसरी ओर अग्नि हो तो उन दोनोंके बीच पडा हुआ...’ दोनोंके बीच पडा हुआ ‘मनुष्य अग्निसे दूर भागता हुआ बईकी ओर ढलता है,...’ झुकता है. आलाहा..! अग्नि और बई दो बाजू हों. बीचमें पडा है. तो अग्निसे दूर भागता है, बईकी ओर ढलता है. वैसे भगवान साधकदशा.. आलाहा..! अक ओर निर्मल दशा है, अक ओर निर्मल दशाका बईका ढेर है, अक ओर रागका विकल्प है. दोनोंके बीच पडा है. आलाहा..! साधक चौथे, पांचवे, छठेमें. आलाहा..! तो भी, अग्नि और बईके बीच पडा हुआ (मनुष्य) अग्निसे लटकर बईकी ओर जाता है. वैसे भगवान आत्मा आत्माके सम्यग्दर्शनमें ज्ञानका स्वाद आया, वहां राग आता है, पूर्ण वीतराग नहीं है तो, वह राग अग्नि समान है. वहांसे भागकर आत्माकी शांतिकी ओर आता है. आलाहा..! ‘दूर भागता हुआ बईकी ओर ढलता है,...’

‘उसी प्रकार जिसने थोडा भी सुभद्रका स्वाद यजा है,...’ सम्यग्दर्शनमें-अनुभूतिमें थोडा ही (स्वाद आया है). चौथे गुणस्थानमें अनुभूतिमें आत्माके आनंदका स्वाद थोडा यजा है. आलाहा..! स्वाद यजा है. ‘जिसे थोडी भी शांतिका वेदन वर्त रहा है...’ जिसे थोडी भी शांतिका वेदन वर्त रहा है. ‘ऐसा ज्ञानी जव दाहसे अर्थात् रागसे दूर भागता है...’ रागको दाह कहा है न? राग आग दाह दहै सदा. छल

ઢાલામ્ને છે. રાગ આગ દાહ દહૈ સદા. યહાં રાગસે ઘર્મી (દૂર) ભાગતા છે, કહતે હૈં. ભાગનેકા અર્થ ઉસકા પ્રયત્ન-વૃત્તિ આત્માકી ઓર છે. દ્રવ્યકી ઓર ઝુકતા છે. છે રાગ, આતા છે. વીતરાગ ન હો તબતક આતા છે. રાગ ન હો સાઘકકો (ઐસા નહીં છે). સાઘક છે વહાં બાઘક આતા છે. મિથ્યાદષ્ટિકો પૂર્ણ દુઃખી, પૂર્ણ વિકારી. સિદ્ધ પૂર્ણ સુખી, પૂર્ણ નિર્વિકારી. આહાહા..! સાઘક આનંદ ઓર રાગ-દુઃખ દોનોંમ્ને છે. પૂર્ણ આનંદ નહીં, ઈતના રાગ છે. પરંતુ રાગકી ઓર નહીં ઝુકતા. પુરુષાર્થ શાંતિકી ઓર, સ્વભાવકી ઓર, દ્રવ્યકી ઓર ઢલતા છે. આહાહા..! ઐસા માર્ગ સમજના મુશ્કિલ પડે.

‘દાહસે અર્થાત્ રાગસે દૂર ભાગતા છે એવું શીતલતાકી ઓર ઢલતા છે.’ શીતલતાકી ઓર ઢલતા છે. અપના ભગવાન શીતલતા, શાંતિ.. શાંતિ.. શાંતિ.. શાંતિ.. જિસમ્ને આકુલતાકા, ગુણ-ગુણી ભેદકે વિકલ્પકી આકુલતા ભી નહીં, ગુણ-ગુણી ભેદકા વિકલ્પ ઓર ગુણ એવં યહ પર્યાય, ઐસા લક્ષ હોતા છે તો વિકલ્પ આતા છે. વહ વિકલ્પ ભી અશાંતિ છે. પ્રભુમ્ને શાંતિ પ્રગટ હુયી છે તો શાંતિકી ઓર ઝુકતા છે. શાંતિકી ઓર ઝુકતા છે. સાઘકકા ઝુકાવ શાંતિકી ઓર છે. સાઘકકા ઝુકાવ રાગકી ઓર નહીં છે. ફિર ભી રાગ આતા છે. ફિર ભી રાગકા જ્ઞાન કરતે હૈં, ઐસા કહનેમ્ને આતા છે. વાસ્વતમં તો વહ જ્ઞાનકા જ્ઞાન કરતા છે. જ્ઞાનકા વહી સ્વભાવ છે. રાગ આયા ઈસલિયે રાગકા જ્ઞાન હુઆ ઐસે નહીં. વહ જ્ઞાનકા સ્વભાવ ઉસ સમયકા ઈતના છે કિ અપનેકો જ્ઞાને ઓર રાગકો જ્ઞાને. રાગકી હયાતી છે ઈસલિયે જ્ઞાન હુઆ, ઐસા ભી નહીં. આહાહા..! દોનોંકા જ્ઞાન ઉસી સમય પ્રગટ હોનેકા સ્વતઃ કર્તા, કર્મ, કરણ ષટ્કારકસે પરિણતિ ઉત્પન્ન હોતી છે. આહાહા..! સાઘકકો શાંતિકા, સમકિતકા થોડા અનુભવ હુઆ ઉસમ્ને જો પર્યાય ષટ્કારકરૂપ પરિણમતિ છે, ઉસકે કર્તાકા લક્ષ્ય સ્વદ્રવ્યકી પર ઝુકતા છે. રાગ આતા છે, લેકિન ઉસ ઓર ઝુકતા નહીં. આહાહા..! ઐસા માર્ગ છે. પહલે તો સમજ કરની મુશ્કિલ પડે. આહાહા..! ઓર યહ કિયે બિના પ્રભુ! કિસી ભી પ્રકારસે જન્મ-મરણકા અંત આયે ઐસા નહીં છે. જન્મ ઓર મરણકા અંત.. ભલે એકેન્દ્રિય, દો ઈન્દ્રિય, તીન ઈન્દ્રિયમ્ને મા-બાપ નહીં હોતે, ફિર ભી જન્મ તો છે ન. મનુષ્ય ઓર તિર્યચમ્ને જન્મમ્ને મા-બાપ હોતે હૈં. દેવમ્ને મા-બાપ હોતે નહીં. લેકિન જન્મ તો છે ન. નારકીમ્ને મા-બાપ હોતે નહી, લેકિન જન્મ તો છે ન. નારકીમં મા-બાપ નહીં છે, પરંતુ જન્મ તો હોતા છે ન. એકેન્દ્રિયમ્ને મા-બાપ નહીં છે, ફિર ભી જન્મ તો હોતા છે ન. આહાહા..! યે જન્મ-મરણકા દુઃખ, ઉસસે જ્ઞાની ભાગતે હૈં. આહાહા..! અંતરમ્ને શાંતિ.. શાંતિ.. શાંતિ.. દૂસરી ઓરકા

जुकाव (नहीं है).

अेक आता है, प्रवचनसार. भगवानकी स्तुतिमें... 'एवं खु णाणिणो सारं' हमारे गुरु कहते थे, लेकिन बिलटा कहते थे. 'एवं खु णाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचणम'. किसी भी प्राणीका घात नहीं करना, वह बात करते थे. ऐसा अर्थ नहीं है. 'एवं खु णाणिणो सारं' ज्ञानीका सार वह है कि 'जं न हिंसइ किंचणम'. रागका अंश करके भी आत्माकी हिंसा होती है. आह्लाहा..! 'एवं खु' 'एवं खु' अर्थात् निश्चय. 'णाणिणो सारं' हमारे संप्रदायके गुरु थे. शांत थे, बहुत कषाय मंद, ब्रह्मचारी थे. परंतु दृष्टिमें बिलकुल विपरीतता. ईसका ऐसा अर्थ करते थे. शांतिसे करते थे, हां! उद्धत नहीं. लेकिन यह वस्तु नहीं मिली. 'एवं खु णाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचणम' किसीका घात नहीं करना. आह्लाहा..! 'एवं खु णाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचणम, अहिंसा समयं चेव' समय अर्थात् सिद्धांतका सार परको घात नहीं करना, यह सिद्धांतका सार है. अहिंसा. ऐसा कहते थे. 'अहिंसा समयं चेव एयावत्त वियाणिया' परकी थोड़ी भी हिंसा न करनी, सो अहिंसा पूरे सिद्धांतका सार है. यह ज्ञाना उसने सब ज्ञान लिया. आह्लाहा..! ऐसा है नहीं.

यहां तो 'एवं खु णाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचणम' रागके अंशकी उत्पत्ति नहीं करते. आह्लाहा..! 'एवं खु णाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचणम, अहिंसा समयं चेव' रागकी अनुत्पत्ति और शांतिकी उत्पत्ति, वह अहिंसा. यह समयका सिद्धांतका सार है. 'अहिंसा समयं चेव' अहिंसा, यह अहिंसा, हां! परकी छकायकी अहिंसा कहते हैं, परंतु छकायमें प्रभु! तू है कि नहीं? छ कायकी हिंसा नहीं करना. लेकिन छकायमें तू है कि नहीं? तो तेरी हिंसा नहीं करना उसका अर्थ क्या? आह्लाहा..! 'समयं चेव' रागकी उत्पत्ति नहीं करना और अरागी आत्मदशा उत्पन्न करना, यह समस्त सिद्धांतका सार है. निर्मल दशा उत्पन्न करनी सार है. दृष्टिका विषय क्या, यह तो उसमें नहीं है. पर्यायकी व्याख्या है. आह्लाहा..!

'एयावत्त वियाणिया' जिसने ईतना ज्ञाना उसने सब ज्ञाना, ऐसा कहते थे. पर अेकेन्द्रिय जव, हरितकायको भी न मारना, उसने सब ज्ञाना. ऐसा है नहीं. किसीकी हिंसा आत्मा कर सकता नहीं. किसीक दया पाल सकता नहीं. अेक द्रव्य दूसरे द्रव्यको छूता नहीं. आह्लाहा..! तेरी अहिंसा रागकी अनुत्पत्ति वह तेरी अहिंसा. रागकी उत्पत्ति, वह तेरी हिंसा. आह्लाहा..! यह मार्ग है. पुरुषार्थसिद्धि उपयमें है. अमृतचंद्राचार्य पुरुषार्थसिद्धिमें रभा है कि परकी दयाका भाव.. पाठ है, हिंसा है. ऐसा पाठ है. पुरुषार्थसिद्धि उपाय. परकी दयाका भाव हिंसा है. क्योंकि पर-

ओरके लक्ष्यमें राग आया. रागमें आत्माके स्वभावका घात हुआ. आलाला..!

मुमुक्षु :- कोई दया नहीं करेंगे.

उत्तर :- कौन करता है? कर ही नहीं सकता. सेठार्थ नहीं कर सकता. यहां दुकान पर सेठार्थ करते हैं न. आलाला..! यह नहीं कर सकता, ऐसा कहते हैं. भैया! तू कर सकता है तो राग-द्वेष अथवा मिथ्यात्व अथवा सम्यक् अथवा वीतरागता. ईसके अलावा कुछ नहीं कर सकता. कठिन पडे जगतको, लेकिन सत्य तो यह है. यहां वही कहा है न. आलाला..!

‘शांतिका वेदन वर्त रहा है ऐसा ज्ञानी जेव दालसे अर्थात् रागसे दूर भागता है एवं शीतलताकी ओर ढलता है.’ आलाला..! उरु पूरा हुआ न? अब कौन-सा है? उरु.

मुनिराज बारंबार निर्विकल्परूपसे चैतन्यनगरमें प्रवेश करके अद्भुत ऋद्धिका अनुभव करते हैं. उस दशामें, अनंत गुणोंसे भरपूर चैतन्यदेव भिन्न-भिन्न प्रकारकी यमत्कारिक पर्यायोंरूप तरंगोंमें एवं आश्चर्यकारी आनंदतरंगोंमें डोलता है. मुनिराज तथा सम्यग्दृष्टि जेवका यह स्वसंवेदन कोई और ही है, वचनातीत है. यहां शून्यता नहीं है, जगृतरूपसे अलौकिक ऋद्धिका अत्यंत स्पष्ट वेदन है. तू यहां ज, तुजे चैतन्यदेवके दर्शन होंगे. उरु.

उरु. तुम्हारी भाषा क्या है? तीनसौ उनतीस. आलाला..! ‘मुनिराज बारंबार निर्विकल्परूपसे चैतन्यनगरमें प्रवेश करके अद्भुत ऋद्धिका अनुभव करते हैं.’ यह मुनि. पंच मलाप्रत पावते हैं, समिति, गुमि पावते हैं, शिष्य बनाते हैं, समकितकी रक्षा करते हैं, (ऐसा नहीं कहा है). आलाला..! ‘मुनिराज बारंबार निर्विकल्परूपसे चैतन्यनगरमें प्रवेश करके अद्भुत ऋद्धिका अनुभव करते हैं.’ भाईका प्रश्न था न? यह यहां आया. ‘उस दशामें, अनंत गुणोंसे भरपूर चैतन्यदेव भिन्न-भिन्न प्रकारकी यमत्कारिक पर्यायोंरूप तरंगोंमें..’ आलाला..! द्रव्य पर जुकाव होनेसे मुनिराजको निर्विकल्प दशामें.. आलाला..! उस दशामें ‘अनंत गुणोंसे भरपूर चैतन्यदेव भिन्न-भिन्न प्रकारकी यमत्कारिक पर्यायोंरूप..’ आलाला..! आनंद, शांति, स्वच्छता, प्रभुता.. आलाला..! निष्कलंकता, अतीन्द्रिय आनंदका भेव उस समयमें, अनंत गुणकी व्यक्तता यमत्कारिक प्रगट होती है. अनंत गुणोंकी शक्ति. आलाला..! ‘यमत्कारिक पर्यायोंरूप तरंगोंमें एवं आश्चर्यकारी आनंदतरंगोंमें डोलता है.’ मुनिराज तो ईसको कहें.

आलाला..!

अतीन्द्रिय आनंद जिनको झुल गया है. अतीन्द्रिय आनंद तो समकितमें झुला है, परंतु मुनिको तीन कषायका अभाव होकर अतीन्द्रिय आनंदका गंज आ गया है. समयसार पांचवीं गाथामें कला. कुंदकुंदाचार्य मुनि थे. प्रचुर स्वसंवेदन मेरा वैभव है, ऐसा कहते हैं. मलाप्रत आदि मेरा वैभव नहीं. प्रचुर स्वसंवेदन मेरा वैभव है. इस वैभवसे मैं समयसार कहूंगा. आलाला..! मुनिराज ऐसा कहते हैं. हमारा निज वैभव प्रचुर. प्रचुर क्यों लिया? कि समकितकी भी अंश तो आता है. और पांचवे गुणस्थानमें उससे विशेष आनंद आता है. मुनिको तो प्रचुर होता है. आलाला..! प्रचुर अर्थात् बहुत. आनंदकी जाड़ आ जाती है. भरमार आनंद.. आनंद.. आनंद. राग आता है, लेकिन उस राग पर नजर नहीं है. आला..! ऐसा अनुभव करते हैं. अद्भुत ऋद्धिका अनुभव करते हैं.

‘उस दशामें अनंत गुणोंसे भरपूर चैतन्यदेव भिन्न-भिन्न प्रकारकी यमत्कारिक पर्यायोंरूप तरंगोंमें एवं आश्चर्यकारी आनंदतरंगोंमें डोबता है.’ आलाला..! मुनिपना बापू! अलौकिक है. आलाला..! जिसमें अतीन्द्रिय आनंदका दरिया छूटा है. अतीन्द्रिय आनंदका दरिया भगवान. आलाला..! वह उछावा मारता है. अतीन्द्रिय आनंदसे भरा पडा भगवान मुनिराजको पर्यायमें उसका उछावा (आता है), जाड़ आती है, आनंदका उछावा आता है. अतीन्द्रिय आनंदकी. आला..! ‘मुनिराज तथा सम्यग्दृष्टि श्रवका यह स्वसंवेदन कोई और ही है,....’ आलाला..! स्वसंवेदन कोई और जातिका है. ‘वचनातीत है.’

‘वहां शून्यता नहीं है.’ स्वसंवेदन विकल्पसे शून्य है, परंतु स्वभावसे शून्य नहीं है. विकल्पसे शून्य हो गया. आलाला..! परंतु स्वभावसे अशून्य है. स्वभावके अस्तित्वका दल प्रगट हुआ है. आनंदके तरंग उठते हैं. आलाला..! ‘जगृत्तरूपसे अलौकिक ऋद्धिका अत्यंत स्पष्ट वेदन है.’ मुनिको तो जगृत्तरूपसे भगवान अतीन्द्रिय आनंदका भजना झुल गया है. भजना झुल गया है, कपाट झुल गया है. आलाला..! रागकी ऐकतामें तावा मार दिया था. भगवानकी ऋद्धिको रागकी ऐकतामें तावा मार दिया था, वह झुल गया. आलाला..! रागकी ऐकता टूटकर ऋद्धिकी ऐकता हो गयी. ‘जगृत्तरूपसे अलौकिक ऋद्धिका अत्यंत स्पष्ट वेदन है.’ आलाला..! प्रभु! ‘तू वहां जा, तुझे चैतन्यदेवके दर्शन होंगे.’ यह अंतिम बात कही.

(श्रोता :- प्रमाणा वचन गुरुदेव!)